# गदय आकलन

**अपठित परिच्छेद पर आकलन हेतु प्रश्न तैयार करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए।**

1. प्रश्न तैयार करने से पहले परिच्छेद को दो बार पढ़ें।
2. प्रश्न मन में तैयार करके उसका उत्तर ढूँढ़ें, फिर प्रश्न लिखें।
3. प्रश्न सरल, छोटे एवं स्पष्ट होने चाहिए।
4. उत्तर परिच्छेद के अनुसार संक्षिप्त होने चाहिए, बढ़ा-चढ़ाकर या उदाहरण देकर न लिखा जाए।
5. प्रश्न लिखते समय उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करना चाहिए।

**गद्य आकलन के नमूने**

**निम्नलिखित अपठित गद्यखंड पर आकलन हेतु चार ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों।**

1. जीवन एक सुंदर कलाकृति है, परंतु इस कलाकृति की सुंदरता को द्विगुणित करनेवाली अनेक बातें मनुष्य अपनी जिंदगी में पूरी नहीं कर सकता। गतिशील युग के साथ दौड़ते हुए उसके पास समय नहीं बचता। वैसे तो जीवन एक लड़ाई भी है। जिंदगी के हर मोड़ पर आदमी को कभी संघर्ष करना पड़ता है, तो कभी चुप्पी साधकर अगले सफर के लिए प्रयाण करना पड़ता है। जिंदगी में मनुष्य को गति के सहारे आगे बढ़ना चाहिए। जीवन की बदलती अवस्थाएँ मनुष्य को केवल एक बार ही प्राप्त होती हैं। जीवन आगे बढ़ता जाता है। अच्छे शौक पूरे करने की बात पीछे पड़ जाती है, परंतु प्राप्तकाल को सुनहरा मौका मानकर ही हमें जो मिले उसे सहेजकर रखना चाहिए। इससे हम खुद आनंद पा सकेंगे और दूसरों को भी दे सकेंगे।

**उत्तर:** प्र.1. जीवन कैसी कलाकृति है?

प्र.2. कैसे युग के साथ मनुष्य दौड़ रहा है?

प्र.3. जीवन क्या है?

प्र.4. जीवन की बदलती अवस्थाएँ मनुष्य को कितनी बार प्राप्त होती हैं?

2. **परोपकार मनुष्य के सभी गुणों का मूल है। परोपकार के कारण मनुष्य में अनेक प्रकार के गुण आ जाते हैं। परोपकार एक ऐसा जादू है, जो मनुष्य के हृदय में पवित्रता, दया, क्षमा, त्याग, प्रेम आदि गुणों को उत्पन्न करता है। इस प्रकार परोपकार सभी गुणों की खान है।**

सत्य तो यह है कि परोपकारी मनुष्य साक्षात ईश्वर के समान होता है। उसका हृदय सागर की भाँति विशाल होता है। संपूर्ण मानव समाज के लिए उसमें प्रेम भरा रहता है। अत: परोपकारी मनुष्य विश्वबंधु होता है। परोपकार से मनुष्य को सच्चा आनंद और सच्चा सुख मिलता है। राजा अपनी शक्ति के बल पर मनुष्य के शरीर पर अधिकार कर सकता है, किंतु परोपकार करने वाला मनुष्य असंख्य मनुष्यों के मन को जीत लेता है।

**उत्तर:** प्र.1. परोपकार से मनुष्य में कौन-से गुण उत्पन्न होते हैं?

प्र.2. परोपकार से परोपकारी मनुष्य को क्या लाभ होते हैं?

प्र.3. राजा और परोपकारी मनुष्य में क्या अंतर होता है?

प्र.4. इस गद्यखंड को उचित शीर्षक दीजिए।

3. विज्ञान के युद्धविषयक अस्त्र-शस्त्रों के आविष्कारों ने देश की सभ्यता और संस्कृति को खतरे में डाल दिया है। परमाणु बम और हाइड्रोजन बम भी विज्ञान की ही देन है। मनुष्य का विनाश करने वाली विषैली गैस भी विज्ञान द्वारा ही खोजी गई है। विज्ञान के ये आविष्कार, जो मनुष्य जाति, सभ्यता एवं संस्कृति के विनाश का कारण बनते हैं, देश के लिए अभिशाप हैं। वास्तव में विज्ञान की सिद्धियाँ अद्भुत हैं। ये अभिशाप और वरदान हमारे प्रयोग के कारण से बनती हैं। यदि हम इनका प्रयोग अपने देश के लाभ, मनुष्य के कल्याण के लिए करें तो ये वरदान सिद्ध हो सकती हैं। चाकू या छुरी फल व सब्जी काटने के लिए बनाए गए हैं, लेकिन प्रयोगकर्ता इसका प्रयोग किसी का गला काटने या मारने के लिए करे, तो इसमें छुरी-चाकू बनाने वाले का क्या दोष हैं। अतएव हमें इन सभी वस्तुओं का अपने लाभ के लिए और मानव जाति के कल्याण के लिए प्रयोग करना चाहिए, जिसके लिए वास्तव में इनका आविष्कार किया गया है।

**उत्तर:** प्र.1. देश की सभ्यता और संस्कृति को किसने खतरे में डाल दिया है?

प्र.2. परमाणु बम और हाइड्रोजन बम किसकी देन है?

प्र.3. चाकू और छुरी को किसलिए बनाया गया है?

प्र.4. अस्त्र-शस्त्र का आविष्कार किसके कल्याण के लिए किया गया है?

4. भारतीय संगीत में देश के सभी भागों के संगीत का समावेश होता है। पंजाब का भांगड़ा, गुजरात का गरबा, उड़ीसा का ओडीसी, आंध्र का कुचीपुडी तथा केरल का कथकली आदि नृत्य सारे देश में लोकप्रिय हैं। भारत में सभी प्रांत एक ही केंद्रीय सत्ता के अधीन हैं। सारे देश का एक संविधान, एक कानून, एक राष्ट्रध्वज तथा एक राष्ट्रगीत है। भारतीय सेना में सभी प्रांतों के सैनिक हैं। क्रिकेट, फुटबॉल जैसे खेलों की राष्ट्रीय टीम में अलग-अलग प्रांतों के खिलाड़ी चुने जाते हैं।

**उत्तर:** प्र.1. पंजाब के लोकनृत्य का नाम लिखिए?

प्र.2. कथकली कहाँ का लोकनृत्य है?

प्र.3. भारत के सभी प्रांत किसके अधीन हैं?

प्र.4. भारतीय सेना में कहाँ के सैनिक हैं?

## स्वाध्याय

**निम्नलिखित अपठित गद्यखंड पर आकलन हेतु चार ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों।**

1. मानव के जीवन में नारी का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है, उसके बिना पुरुष अधूरा है। इसी कारण कहा गया है कि शक्ति के बिना शिव भी शव बनकर रह जाते हैं। इसी कारण शिव को 'अर्धनारीश्वर' कहा जाता है। नारी के दो मुख्य रूप हैं। सामान्य रूप में वह अबला कहलाती है किंतु आत्मसम्मान पर ठेस पहुँचने की दशा में चंडी का रूप धारण कर लेती है। उसे धरती के समान माना गया है। अपने तप और सहनशीलता की शक्ति से वह देवताओं को भी विवश कर देती है। 'सावित्री' एक ऐसी ही भारतीय नारी थी।

2. संपादकाचार्य बाबूराव विष्णु पराडकर का हिंदी भाषा तथा साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान है। हिंदी पत्रकारिता के तो आप जनक ही थे। पत्रकारिता को समृद्ध करने के साथ ही उसके माध्यम से आपने राष्ट्रीय जागरण तथा चेतना का प्रसार किया। अपने मामा देउसकर जी की प्रेरणा से आप कोलकाता गए। प्रकट रूप में तो आप पत्रकारिता का कार्य करते थे, पर आपका मुख्य लक्ष्य था क्रांतिकारी दल में काम करना। आपका संबंध योगीराज अरविंद घोष, रासबिहारी आदि से था। क्रांतिकारियों के सहयोगी होने के नाते अंग्रेज सरकार ने सन 1916 में राजद्रोह के अभियोग में गिरफ्तार कर अनेक वर्षों तक विभिन्न स्थानों में आपको नजरबंद रखा।

3. हँसने का सामाजिक पक्ष भी होता है। हँसकर हम लोगों को अपने निकट ला सकते हैं और व्यंग्य करके उन्हें दूरस्थ बना देते हैं। जिसको भगाना हो उसकी थोड़ी देर हँसी-खिल्ली उड़ाइए, वह तुरंत बोरिया-बिस्तर गोलकर पलायन करेगा। जितनी मुक्त हँसी होगी, उतना समीप व्यक्ति खींचेगा, इसलिए तो श्रोताओं की सहानुभूति अपनी ओर घसीटने के लिए चतुर वक्ता अपना भाषण किसी रोचक कहानी या घटना से आरंभ करते हैं। सामाजिक नियमों और मूल्यों को मान्यता दिलाने और रूढ़ियों को निष्कासित करने में पुलिस या कानून सहायता नहीं करता, किंतु वहाँ हास्य का चाबुक अचूक बैठता है। हास्य के कोड़े, उपहास-डंक और व्यंग्य-बाण मारकर आदमी को रास्ते पर लाया जा सकता है। इस प्रकार गुमराह बने हुए समाज की रक्षा की जा सकती है।

4. मनुष्य जहाँ जन्म लेता है, वहाँ की धूल में खेलकर बड़ा होता है। वहाँ से उसे स्वाभाविक प्रेम हो जाता है। वहाँ के सभी लोग उसके जाने-पहचाने हो जाते हैं। लगभग सभी उसके समान भाषा बोलते हैं और सभी का रहन-सहन एक-सा होता है। ऐसी दशा में वहाँ के लोगों से उसकी ममता का होना स्वाभाविक है। मनुष्य चाहे कितने ही अच्छे स्थान पर क्यों न रहने लगे, उसका मन जन्मभूमि में पहुँचने को उत्सुक रहता है। जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है। जिस देश में हमने जन्म लिया है, जिसके अन्न, जल और वायु से हमारा पालन हुआ है, उसके प्रति प्रेम की भावना रखना हमारा कर्तव्य है। देश की उन्नति में ही हमारी उन्नति है। यदि देश गिरी दशा में होगा, तो न हम अधिक दिन संपन्न रह सकते हैं और न हमारा मान हो सकता है। देश के प्रति सबको ममता की भावना रखनी चाहिए।